Class XII Dr. Chitranjan Kr Thakur

परिवार की विशेषताएं (Characteristics of the Family)

मैकाइवर एवं पेज ने परिवार की दो प्रकार की विशेषताएं बतायी है (i) सामान्य विशेषताएं (ii) विशिष्ट विशेषताएं

(I) सामान्य विशेषताएं => इसके अन्तर्गत चार प्रकार की विशेषताओं का उल्लेख किया जाता है।

(i) विवाह सम्बन्ध - विवाह के सम्बन्ध के द्वारा परिवार अस्तित्व में आया। विवाह के द्वारा ही स्त्री एवं पुरुषों में यौन सम्बन्ध स्थापित करने की स्वीकृति मिली जिससे बच्चों का जन्म हुआ और परिवार बना।

(ii) विवाह का एक स्वरूप - परिवार का एक स्वरूप परिवार की उत्पत्ति है। एक विवाही या बहुविवाही सम्बन्ध के द्वारा उत्पन्न बच्चे तथा उनके माता पिता एक परिवार का निर्माण करते है।

(iii) वंशनाम की व्यवस्था - सभी परिवारों के बच्चों के वंश के आधार पर नामकरण करने की और न की व्यवस्था या आधार रहते है। उसी वंशनाम से परिवार के बच्चों की पहचान मिलती है।

2020-8-20 07:49

II

(iv) आर्थिक व्यवस्था - परिवार के सदस्यों का भरण-पोषण करने व उन्हें जीवित रखने के लिए किसी न किसी प्रकार की अर्थव्यवस्था सभी ~~समाजों~~ परिवारों में देखने को मिलती है। अर्थव्यवस्था के माध्यम से ही सदस्यों का भरण-पोषण होता है।

(II) विशिष्ट विशेषताएं = परिवार की विशिष्ट विशेषताएं इस प्रकार हैं

(i) सार्वभौमिकता = सार्वभौमिकता परिवार की विशिष्ट विशेषताओं में से एक है। विश्व के प्रत्येक समाज में परिवार सार्वभौमिकता के रूप में पाया जाता है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति विश्व के किसी न किसी परिवार का सदस्य अवश्य होता है। सामाजिक विकास के सभी स्तरों पर परिवार देखने को मिलते हैं।

(ii) भावात्मक आधार परिवार के प्रत्येक सदस्य आपस में भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं। माता पिता और एवं बच्चों के बीच परस्पर त्याग एवं वात्सल्य की भावना उपस्थित रहती है। पति पत्नी के बीच घनिष्ठ प्रेम सम्बन्ध पाया जाता है। परिवार में प्रेम सहयोग, दया, सहिष्णुता, त्याग बलिदान आदि की भावनाएं विद्यमान होती हैं जो पारिवारिक एवं संगठन को मजबूती प्रदान करती हैं।

2020-8-20 07:49

(iii) निर्माणात्मक प्रभाव : परिवार में बच्चों एवं सदस्यों का चरित्र निर्माण किया जाता है। पीढ़ी दर पीढ़ी आने पर उनके परिवार की स्पष्ट छाप होती है। मनुष्य के स्वभाव, आदत, मनोवृत्तियों आदि पर परिवार का प्रभाव पड़ता है। इसलिए कुछ ने ~~मानव को~~ परिवार को मानव स्वभाव की पोषिका कहते हैं।

(iv) सीमित आकार - परिवार सामाजिक संरचना की सबसे छोटी इकाई है। इसका आकार बहुत सीमित आकार होता है। इसके सदस्यों में ~~[illegible]~~ मूल रूप से पति, पत्नी सन्तान और निकट सम्बन्धी होते हैं। अतः निश्चित रूप से अन्य समूहों एवं संगठनों की तुलना में परिवार का आकार सीमित होता है।

(v) सामाजिक संरचना में केन्द्रीय स्थिति - परिवार की सामाजिक संरचना में केन्द्रीय स्थिति है और समाज का निर्माण भी परिवार रूपी इकाइयों के मिलने से होता है। आदिम समाजों में तो ~~[illegible]~~ ऐसे संगठन हैं, जैसे गोत्र, भ्रातृदल, वंश आदि जिनकी सदस्यता परिवार के आधार पर ही प्राप्त की जाती है।

2020-8-20 07:49

(vi) सदस्यों का उत्तरदायित्व :- परिवार अपने सदस्यों से कुछ उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने के लिए प्रेरित करता है। परिवार का जीवन ऐसी मौलिक भावनाओं - जैसे मातृनिष्ठा, पिता की सावधानी एवं स्नेह आदि से भरपूर होता है कि इसके उत्तरदायित्व की कोई सीमा नहीं होती। इसलिए अपना सम्पूर्ण जीवन परिवार के दायित्वों का निर्वाह करता है।

(vii) सामाजिक नियमन : परिवार का संगठन नैतिक नियमों और सामाजिक विधियों के द्वारा निर्धारित होता है। विवाह द्वारा परिवार का निर्माण होता है। प्रत्येक समाज में विवाह सम्बन्धी रीति रिवाज एवं कानून होते हैं, इन्हें सब दम्पति को मानना पड़ता है। ये सामाजिक नियमन परिवार को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।

(viii) परिवार की स्थायी व अस्थायी प्रकृति :- एक समिति के रूप में परिवार स्थायी भी है और अस्थायी भी। सदस्यों की मृत्यु, पृथक्करण, तलाक आदि से एक परिवार की सदस्यता समाप्त हो सकती है। लेकिन एक संस्था के रूप में परिवार स्थायी है, संस्था के रूप में परिवार के नियम और कार्यप्रणाली आते हैं जो परिवार को स्थायित्व प्रदान करते हैं।

2020-8-20 07:49